अमां कौशल्या राणी अ जाओ बारु आ । रघुकुल रघुकुल रघुकुल जो सींगारु आ ।। जो जपतप जननी कयड़ा से सभेई सफलु अजु थियड़ा आया नचणकुदुण जा दींहड़ा मैया वाधाई तोखे लख लख वार आआहे सुन्दर रुपु सलोनो जुणु नीलमु हंस जो छोनो दिसी भरियो हर्ष दिलि दोनों कोट चंद्र खां बालकु उज्यार आ ।। छा सुंदर अंगनि निकाई आ दिसी सुषमा पाण लुभाई आ वाह लालण ललित लुनाई आ कमलिन खां भी कोमलु कुमार आ जहिंजो नामु रामु सुख धाम आ मन देव मुनियुनि विश्राम आ जेको आनंदकंद अभ्राम आ अमां तुहिंजो बारु साकेत सरदार आ।। ट्रे भाउर गद्र वठी आयो आ थियो जननी तो मन भायो आ बाबा दशरथ भी हर्षीयो आ जिहं जन्म सां जग में जैकार आ ।। वंजीं मिथिला में दूल्हु थींदो भंजीं धनुष खे श्रीजू वरींदो सची खुशीअ सां जग़खे भरींदो अचे खीर छटींदी जनक कुमारि आ सदां युगल खे लाद लदाइनि पहिंजे प्राणिन खे परिचाइनि नित् सुखनि साज सजाइनि ग़ाए मैगसि हर्ष हुब़कार आ ।।